किशनगढ़ शैली का भारतीय समकालीन कला पर प्रभाव

संतोश कुमार
विभागाध्यक्ष ,पेंटिग विभाग
सुभारती विश्वविद्यालय,
मेरठ

किशनगढ़ शैली राजस्थान की चित्रकला में अपना विशिष्ट स्थान रखती है साहित्य कला संगीत वस्तु आदि का इस युग में बहुत विकास हुआ राजस्थान के पश्चिमी भाग में भारतीय चित्रकला की गुजराती शैली, जैन शैली, अपभृंश शैली के रूप में विकसित हुई आगे चलकर इसी परम्परा में राजस्थानी शैली का उद्भव हुआ। राजस्थानी चित्रकला के विकास में राजस्थान का प्राचीन इतिहास तथा भारतीय शैलियों से प्रभावित होती हुई अपने चरमोत्कर्ष पर पहुँची। राजस्थानी शैली भारतीय चित्रकला का आदर्श रूप है। राजस्थानी कला में विभिन्न शैलियों का विकास हुआ। इनमें मेवाड़, किशनगढ़ और बूँदी की चित्रकला को उनकी शैलीगत विशेषताओं के कारण महत्व दिया है। राजस्थानी शैली में राधा–कृष्ण की लीलाओं का सुन्दर चित्रांकन हुआ है। रागमाला, रीतिकालीन, छन्द, शास्त्रों पर आधारित चित्रों की रचना हुई । इस शैली में बारीक गतिशील रेखायें तथा एकचश्म चेहरे रेखांकित किए गए हैं तथा नेत्रों को मृग, मछली व खंजन पक्षी की तरह आकर्षक चित्रण किया गया है इस शैली के चित्रकारों ने कृतियों को जनसामान्य तक पहुँचाया 16वीं शताब्दी में बहुत से बहुमूल्य चित्र मुगलों द्वारा नष्ट कर दिए गए परन्तु जनसामान्य तक जो चित्र पहुँच गए वो आज भी सुरक्षित हैं मुगलों के आक्रमण तथा उनके अत्याचारों से पीड़ित हिन्दू समाज में धर्म के प्रति विशेष शक्ति का संचार हुआ । हिन्दी रीतिकालीन कवियों में केशव, मतिराम, बिहारी तथा देव आदि कवियों ने हिन्दू जगत में नए काव्य की प्रेरणा दी बाद मे श्रृंगारिक तथा लोक जीवन पर आधारित चित्रों की रचना हुई मुगलों के आक्रमण से लगभग सारा राजस्थान प्रभावित हुआ था परन्तु मेवाड़ राज्य में अन्त तक उनकें काबू में नही आया इसलिए मेवाड़ में ही सर्वप्रथम राजस्थानी शैली की इस कला में संगीत, काव्य विशुद्ध रूप से रचना हुई उनें अलावा बून्दी, जयपुर,अम्बर, किशनगढ़ तथा बीकानेर की शैलियॉ भी प्रमुख हैं डॉ .मोतीचन्द्र ने मेवाड़, किशनगढ़ और बून्दी की चित्रकला को उनकी शैलीगत विशेषताओं के कारण विशेष महत्व दिया भारतीय चित्रकारों ने इस शैली से प्रेरणा लेकर अन्य भौलियों का विकास किया। राजस्थानी कला का प्रभाव आज भी कलाकारों की तूलिका पर प्रतीत होता है। यह बहुत ही हर्श की बात है कि वर्तमान में भी भारतीय समकालीन कला पर राजस्थानी कला की छाप देखने को मिलती है।

राजस्थानी चित्रकला की एक विशिष्ट शैली किशनगढ़ शैली है जो भारतीय कला में अपनी विशिष्ट पहचान रखती है किशनगढ़ शैली प्रभाव भारतीय समकालीन कला पर उत्कृष्ट छाप है किशनगढ़ शैली की स्थापना महाराजा किशनसिंह ने 1609 में की थी जोधपुर के राजा उदयसिंह के सोलह पुत्रों में से आठवें पुत्र 'किशनसिंह' ने इसकी नींव डाली इस शैली की चित्र शैली में कृष्ण भक्ति एवं 'बनी–ठनी' के अनिंद्य रूप सौन्दर्य की प्रेरणा से संसार भर में प्रसिद्ध किशनगढ़ शैली राजस्थान के एकीकरण से पूर्व स्थापित किशनगढ़ रियासत की देन है किशनगढ़ शैली के उत्कृष्ट स्वरूप के निर्माण में राजा रूपसिंह, मानसिंह, राजसिंह तथा इनके पुत्र महाराजा सावन्तसिंह का विशेष योगदान था महाराजा सावन्तसिंह की प्रिया 'बनी–ठनी' अपने अद्वितीय रूप–सौन्दर्य के कारण रूप चित्रण का आदर्श बन गई। महाराजा सावन्तसिंह कृष्ण–भक्त थे इनके राज्य में एक दासी गायिका रहती थी वह सौन्दर्य से परिपूर्ण होने के साथ कण्ठस्थ भी थी वह कृष्ण–काव्य में बहुत प्रसिद्ध थी सावन्तसिंह भी बचपन से ही काव्य सृजन तथा 75 ग्रंथो के रचयिता थे सावन्तसिंह अपने राज्य में दासी के प्रति आकर्षित हुए इस प्रेम–प्रसंग से ही सावन्तसिंह की मधुरा–भक्ति तीव्र हुई यही सुन्दरी बनी–ठनी के नाम से प्रसिद्ध हुई क्योंकि वह रूपवती होने के साथ रहन– सहन भी विशेष था वह श्रृंगार के साथ सदैव नये वस्त्र धारण करती थी इसलिए सुन्दरी का नाम बनी–ठनी पड़ गया और सावन्तसिंह इनके प्रेम में इतने लीन हो गए कि वो बनी–ठनी को राधा की तरह पूजते थे इसलिए वो नागरीदास उपनाम से विख्याात हुए क्योंकि राधा का दूसरा नाम नागरी है और सावन्तसिंह का नाम नागरीदास 'राधा का दास' हो गया बनी–ठनी व नागरीदास वृन्दावन में रहे थे और रसिक बिहारी उपनाम से कविता करते थे किशनगढ़ शैली में चित्रकला व काव्य दोनों ही राधा के सौन्दर्य वर्णन का आधार रहे इस शैली में राधा कृष्ण की विभिन्न लीलाओं का ही चित्रण किया गयाा है नागरीदास की रचनाओं में बनी–ठनी का वर्णन भी राधा के रूप में ही किया है इस शैली में राधा और

कृष्ण को आत्मा और परमात्मा के प्रतीक के रूप में दर्शाया गया है इनके प्रेम में बनी–ठनी के रूप सौन्दर्य को चित्रित करने का श्रेय 'मोरध्वज निहालचंद' को है साहित्यिक पृष्ठभूमि पर आधारित किशनगढ़ शैली के चित्र दर्शक को कविता और कला दोनों का रसास्वादन कराने में पूर्ण सक्षम हैं निहालचंद ने अपने चित्रण में कृष्ण और राधा को एक नया रूप दिया बनी–ठनी को राधा और नागरीदास को कृष्ण का रूप देकर प्रस्तुत किया किशनगढ़ शैली की बनी–ठनी, लियोनार्डो दी विन्सी कृति मोनालिसा के समकक्ष है जिसे विश्व का सर्वोत्कृष्ट चित्र माना गया है बनी–ठनी आदर्श भारतीय नारी का प्रतिनिधित्व करती है भारत सरकार द्वारा किशनगढ़ की राधा पर एक डाक टिकट भी प्रकाशित किया गया है चित्रकार सीताराम, बदनसिंह, अमरू, सूरजमल राजा सावन्तसिंह के समय में थे और बहादुर सिंह के समय में नानकराम तथा इनके वंशज रामनाथ व जोशी सवाईराम ने चित्रण किया सन् 1789 में चित्रकार लाड़लीदास ने इस शैली के विकास में विशेष योगदान दिया कल्याणसिंह के समय में ही 'गीत–गोविन्द' का चित्रण हुआ भारतीय संस्कृति भूत, भविष्य, और वर्तमान में प्रवाहित होने वाली एक अजस्त्र धारा है– मन, कर्म व वचन मानवीय व्यक्तित्व के तीन गुण हैं। इन्हीं तीन गुणों के कारण विभिन्न रचनांऐ होती हैं। ये रचनाऐं मानव मन की संस्कृति का महत्वपूर्ण अंग है जो किशनगढ़ शैली के चित्रों की रेखाओं में गति प्रवाह है तथा रेखायें कोमल बारीक और भावपूर्ण हैं जो समकालीन कला के चित्रकारों के लिए प्रेरणा का स्त्रोत हैं, राधा–माधव की प्रेम लीला, प्रिया, प्रियतम का मधुर मिलन तथा भाव चित्रण किशनगढ़ शैली की विशेषता है। इस शैली के रेखा चित्रण कोमल, बारीक और भावपूर्ण अभिव्यक्ति है। चित्रण में सफाई व नाजुकपन है इस शैली में नारी सौन्दर्य की विशेषता लम्बा पतला चेहरा, लम्बी तथा नुकीली नासिका, लज्जा से झुकी हुई नारी आकृति, लम्बा छरहरा बदन, नेत्रों की बनावट तो किशनगढ़ शैली में विशिष्ट स्थान रखती है। खंजन पक्षी के आकार की तरह लम्बे खिंचे हुए नेत्र, धनुषाकार भौहें, कान के पास झूलती हुई बालों की लट किशनगढ़ शैली की विशेषता है। स्त्रियों की वेश–भूषा चुन्नरदार लहंगा, चोली, पारदर्शी चुन्नी, छोटी बाँहें, खुले हुए गले, गर्दन, माथे पर, हाथों तथा कमर पर आभूषण पहने दर्शाया है और कहीं–कहीं साड़ी भी बनाई गई है जो नारी सौन्दर्य की छवि है। यह शैली रूपनगर व किशनगढ़ दो स्थानों पर विकसित हुई है। इस शैली का प्रभाव भारतीय समकालीन कला में प्रतीत होता है किशनगढ़ शैली समकालीन कला की उत्कृष्ट छाप है।

सहायक ग्रंथ सूची :

भारत की चित्रकला का संक्षिप्त कला का इतिहास
डॉ.गिर्राज किशोर अग्रवाल 'कला और कलम'
भारतीय चित्रकला एवं मूर्तिकला का इतिहास